महाकाली माँ | By Alka Nagi

महाकाली माँ असुरो का काल है
क्रोध जवालामुखी रुप विकराल है

नर मुंडो की माला गले में पड़ी
पाँव रखे हुए माँ असुर पर खड़ी
जिव्हा निकली हुई नेत्र भी लाल है
क्रोध जवालामुखी रुप विकराल है

जब हुंकार रण में महाकाली भरे
राक्षस और असुर सारे दानव डरे
और दुष्टों का देखो बुरा हाल है
क्रोध जवालामुखी रुप विकराल है

अपने भक्तों की तो प्रतिपाला है माँ
उसकी ममता के साथ चले हैं जहाँ
मुन्नाबाज़ कहे माँ मेरी ढाल है
क्रोध जवालामुखी रुप विकराल है

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ae%e0%a4%b9%e0%a4%be%e0%a4%95%e0%a4%be%e0%a4%b2%e0%a5%80-%e0%a4%ae%e0%a4%be%e0%a4%81-by-alka-nagi/